Wadi Samith

Journal From MES Kalladi College

लोगों को दिशा निर्देश दिया | केरल गांधी के रूप में विख्यात के.केलप्पन जी द्वारा पाकनारपुरम नामक गाँव में गान्धी सदन की स्थापना गांधी जी के आगमन के बाद ही हुआ था |

गांधीजी का पांचवां केरल गमन १९३७ में हुआ |दलितों और पिछड़ों में आत्म सम्मान की भावना पैदा करने और महिलाओं को बराबरी का दर्जा दिलाने में रत अय्यंकालि से गाँधीजी का मिलन इस अवसर पर हुआ |दलितों और पिछड़ों में आत्म सम्मान की भावना पैदा करनेज्योतिबा फुले, डॉ. भीमराव आंबेडकर, नारायण गुरुऔर ईवी. रामासामी पेरियार जैसे समाज सेवियों के समान अय्यंकालि का नाम भी जुड़ सकते है |अय्यंकालि और गाँधीजी के बीच दलितों का मन्दिर प्रवेश,छुआछूत जैसे कई सामजिक समस्याओं के बारे में बातचीत हुई | बाद में केरल राज्य के वटकरा नामक जगह पर हुए बैठक में गांधीजी ने भाषण सुनने के लिए आये लोगों से "मेरे लिए तुम क्या दे पाओगे"? सवाल के प्रतिक्रिया के रूप में भीड़ में से कौमुदी नामक एक छह सालवाली लडकी आगे आई और अपना गहना गाँधीजी को दे दिया |इसके बदले में गाँधीजी की हस्ताक्षर की माँग उसने की |इस घटना के बारे में गाँधीजी बाद में "कौमुदी का त्याग' नामक लेख हरिजन में लिखा भी है |गांधीजी ने कौमुदी से बतया था "तुम्हारा त्याग तुम्हारा भूषण होगा|"कौमुदी के बारे में गांधीजी ने ज 'हरिजन'में लिखा भी था

सत्य ,अहिंसा,सत्याग्रह,बहिष्कार,अनशन जैसे नवीन अस्त्रों से अंग्रेज़ि हुकूमत को हिलाते हुए गंधिजी १९२० से १९३७ तक पाँच बार केरल में आये| महात्मा कुल 43 दिन केरल में रहे |केरल में आज़ादी की लहर व्याप्त करने,लोगों में एकता लाने और नवोत्थान की गति बढाने में गाँधीजी का दौरा सहायक रहा |छुआछूत,शराब जैसे सामाजिक कुरीतियाँ जड से उखाड़ने, केरलीय समाज में नर- नरी समत्व लाने और खादी के प्रचार के द्वारा लोगों में देश के प्रति अनुराग स्वावलम्बन की सीख मिली|केरल को अपना व्यक्तित्व मिलने और आत्मनिर्भर व्यक्ति,परिवार,समाज एवं राष्ट्र की संकल्पना केरल के लोगों में जगाने में गाँधीजी का सहारा बहुत मिला है

know india.gov.in

घोषित किया -जिसमें उपाधियों, सिविल सेवाओं, सेना और पुलिस का बहिष्कार और अंततः कर न देना शामिल था| इससे प्रभावित होकर कई लोग असहयोग आन्दोलन के भाग बने|पी अच्युतन,अम्बलक्काट्टू करुनाकरमेनोन,के.पि केशव मेनोन,टी.वी सुन्दर अय्यर,मुहम्मद अब्दु रहमान,असनकोय मोल्ला , मात्तुन्नी जैसे लोग असहयोग आन्दोलन के नेता बने|

1924 में केरल में बाढ़ आई थी। महात्मा गांधी ने 'यंग इंडिया' और 'नवजीवन' में लेख प्रकाशित किए। इन लेखों में उन्होंने लोगों से बाढ़ प्रभावितों की मदद की अपील की थीऔर पीड़ितों के लिए 6,000 रुपये जुटाए भी थे।

१९२५ मे गाँधीजी दुसरी बार केरल में आये|छुआछुत और साम्प्रदायिकता आज़ादी के संघर्ष में बाधा उत्पन्न कर रहे है - यह तथ्य समझ कर गाँधीजी ने भारतीय समाज से इनको दूर करने का कोशिश किया|१९२५ में गाँधीजी का दूसरा आगमन केरल राज्य के छुआछूत के खिलाफ हो रहे संग्रामों को नया ऊर्ज प्रदान किया | वर्कला के शिवगिरी मठमें श्री नारायण गुरु ,तिरुवितामकूर के महाराणी सेतु लक्ष्मी बाई जैसे विभिन्न नेताओं से मुलाकात भी इसी मोके पर हुए | गांधीजी ने बाद में बताया था कि श्री नारायण गुरु के साथ हुए संताद जाती प्रथा के खिलाफ राय बनाने में मदद किया|तिरुविताम्कुर राजघरानेवालों के विनम्रता से गाँधीजी बहुत प्रभावित हुए थे |

वैकोम शिव मन्दिर के सामने से जाने का रास्ता इस्तमाल करने की अनुमति निम्न जाती के लोगों को नहीं थी |इसके खिलाफ हुए संग्राम का नेतृत्व टी.के माधवन,मन्नत्तु पद्मनाभन,के.केलप्पन,ए.के गोपालन जैसे लोगों ने किया | इस संग्राम में चिट्टेटत्तु रामन पिल्लै,चोति,मुत्तुस्वामी जैसे लोग शहीद बन गये | छुआछूत के खिलाफ केरल में हुए पहले सत्याग्रह के रूप में विख्यात वैकोम सत्याग्रह को गाँधीजी के आगमन से नई उर्जा मिली| 1936 में ट्रावनकोर के राजा ने वायकोम मंदिर सहित रास्तों और मंदिरों में पिछड़ी या निचली जातियों के लोगों के प्रवेश पर प्रतिबंध के कानून को समाप्त कर सबके लिए प्रवेश की व्यवस्था की|

गाँधीजी का तीसरा दौरा सन १९२७ अक्तूबर में हुआ |तिरुविताम्कुर और पालक्काट के लोगो को इस बार गाँधीजी से मिलने का मौक़ा मिला |उस जमाने में अवर्ण लोगों के साथ बैठ कर खाना खाने के लिए सवर्ण लोग तैयार नहीं थे |पालक्काट जिला के अकत्तेत्तरा गाँव के समाज सेवक टी.आर कृष्णस्वामी के नेतृत्व में पन्ती भोजन (सवर्ण और अवर्ण एक साथ बैठ कर खाना खाना),निम्न स्तरीय लोगों के लिए विभिन्न कार्यक्रम ,शबरी आश्रम की स्थापना आदि इस आगमन की विशेषताएँ थी | दलित लोगों के लिए कोल्लम जिला के उलियक्कोविल में एक कुआँ का निर्माण भी गांधीजी ने किया| महात्मा गांधी ने **नारी** सशक्तीकरण का बीज डालते हुए कोल्लम में एक बैठक बुलाया| इस तरह केरल में नई उम्मीदों का नीव डाल कर गाँधीजी का तीसरा दौरा का समापन हुआ |

दलितों और पिछड़ों के मंदिर प्रवेश को लेकर केरल में गुरुवायूर सत्याग्रह को के केलप्पन,पी कृष्ण पिल्लै, ए.के गोपालन जैसे नेताओं ने नेतृत्व किया।इसी मौके में सन १९३४ में गाँधीजी चौथा केरल दौरा हुआ|ढेर सारे जन सम्पर्क कार्यक्रमों और नारी सशक्तीकरण कार्यक्रमों में भाग लेकर और केरल राज्य के विभिन्न दलित गाँवों में जा कर वहाँ के गति विधियाँ देख कर मार्ग निदेशन भी दिया | आलुवा के यु.सी कोलेज में गांधीजी नव युवकों से संवाद किया |बाद में पनमना के चट्टम्बीस्वामी के आश्रम जाकर वहाँ एकत्रित हुए

महात्मा गान्धी का केरल दौरा

अहिंसा,सत्य और प्रेम का पथिक गांधीजी की विचारधारा आज भी दुनिया के सामने एक विकल्प के समान खड़ा है।महात्मा गांधी का 'महात्मा' बननें तक का जीवन अहिंसा और उसके प्रयोगों का आख्यान है| दक्षिण आफ्रिका प्रवास गांधीजी ने अपने आप को स्वतंत्र भारत के लिए तैयार करने का प्रयोगशाला के रूप में इस्तमाल किया था| नेल्सन मंडेला ने कहा था –"भारत ने दक्षिण अफ्रीका को बैरिस्टर गाँधी दिया,इस भूमि ने उन्हें महात्मा बनाकर लौटाया|" केरल राज्य के आज़ादी संग्राम , वैकोम और गुरुवायुर सत्याग्रह जैसे कई संग्रामों पर गाँधीजी का प्रभाव पड़ा था |गांधीजी के केरल आगमन शताब्दी और महात्मा के १५१ जयंती अब मना रहे है |केरल राज्य और महातमा के रिश्ता का पुनर्विचार इस लेख में कर रहा हूँ |

"सितम्बर 1920 से फरवरी 1922 के बीच महात्मा गांधी तथा भारतीय राष्ट्रीय कॉन्ग्रेस के नेतृत्व में असहयोग आंदोलन चलाया गया, जिसने भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को एक नई जागृति प्रदान की। जलियांवाला बाग नर संहार सहित अनेक घटनाओं के बाद गांधी जी ने अनुभव किया कि ब्रिटिश सर्कार से न्याय मिलने की कोई संभावना नहीं है| इसलिए उन्होंने ब्रिटिश सरकार से राष्ट्र के सहयोग को वापस लेने की योजना बनाई और इस प्रकार असहयोग आंदोलन की शुरूआत की गई|"1

असहयोग आन्दोलन के प्रचार प्रसार के सिलसिले में गांधीजी ने पुरे भारत का भ्रमण किया था| इसी सिलसिले में केरल राज्य में महात्मा का आगमन हुआ| भारत के अन्य राज्यों के समान केरल भी महात्मा को सुनने और उनके कहने के अनुसार काम करने तैयार थे|उस ज़माने में आज का केरल नहीं था, वह मलबार,कोच्ची और तिरुवितामकूर के रूप में विभक्त था |मलबार ब्रिटन के अधीनता में और कोच्ची और तिरुवितामकूर राजाओं के अधीनता में था |ब्रिटीश शासन के प्रति ज्यादा आन्दोलन मलबार में हुआ| महात्मा केरल में पाँच बार आए थे|पहला आगमन मलबार के कोषीक्कोटमें था |

कोषीक्कोट ,पुरातन मदिराशी राजय के मलबार जिला के आस्थान थे | गाँधीजीऔर खिलाफत के नेता शौकत अली 18 आगस्त उन्नीस सौ बीस को दुपहर 2.30 को कोषीक्कोट पहुंचे | खिलाफत के प्रमुख नेता मुततुक्कोय तंगल के नेतृत्व में केरल राज्य के उस ज़माने के विख्यात आज़ादी कार्यकर्ता के.पी केशव मेनोन,मुहम्मद अब्दु रहमान,ई.मोइतुमौलवी के नेतृत्व में कई लोग गान्धिजी जी को स्वीकार करने के लिए एकत्रित हुए | सेठ नागजी अमरसी के घर में गाँधीजी को रहने की व्यवस्था तैयार किया था|

कोषीक्कोट के समुद्र तट पर तैयार किये विशेष जगह में गाँधीजी ने केरल के लोगों को अपना संदेश दिया | मदिराशी सरकार के रेखाओं से मिले जानकारी के अनुसार लगभग बीस हजार लोग गाँधीजी को सुनने वहाँ एकत्रित हुए थे |विख्यात वकील वी.वी रामय्यर जी ने गांधीजी के भाषण का अनुवाद किया था |

प्रथम विश्व युद्ध के बाद तुर्की-जनता के प्रति ब्रिटन का व्यवहार और जालियाँवालाबाग के अमानवीय व्यवहारों के बरे में बाताते हुए शुरू हुयी भाषण में गांधीजी ने वहाँ एकत्रित लोगो से ब्रिटीश शासन से असहयोग करने का आह्वान किया|गाँधीजी जी असहयोग का चार चरणों वाला एक कार्यक्रम

Editorial Board

Editorial board

Chief Patron

Sri K C K Syed Ali

Chairman & Correspondent

MES Kalladi College

Mannarkkad

Chief Editor

Dr T K Jaleel

Principal

MES Kalladi College

Mannarkkad

Editors

1.Dr Haseena V A

Coordinator

IQAC

MES Kalladi College

Mannarkkad

2.Dr Rasyidh M

HOD Hindi

MES Kalladi College

Mannarkkad

3.[illegible]

HOD Malayalam

MES Kalladi College

Mannarkkad

4.[illegible]

HOD English

MES Kalladi College

Wadi Samith

Journal From MES Kalladi College

Proceedings of the

TWO DAY INTERNATIONAL SEMINAR

ON

MAHATMA-TRANSCENDING THE BOUNDARIES

Organised by : Department of Languages

9th & 10th December 2019